जैन विश्व भारती-समण संस्कृति संकाय, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2014-2015 **8 ब**

जैन विद्या - भाग - 8

(आचार्य भिक्षु)

समय : 3 घण्टे प्रश्न पत्र : द्वितीय पूर्णांक 100

नोट- पिछले कोर्स से 15 नम्बर के प्रश्न इस प्रश्न पत्र में पूछे जा सकते हैं।

(A) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें- 10×2=20

1. आचार्य भिक्षु कौन से ओसवाल थे?
2. तेरापंथ के दो अर्थ होते हैं, वे क्या हैं? लिखें।
3. प्रथम चातुर्मास में स्वामीजी के साथ कौन-कौन संत थे?
4. कीकी की घटना पर श्रावक शोभजी ने कौनसा दोहा सुनाया?
5. किन-किन संतों का विद्रोह लंबा चला और स्वामीजी को चिन्तित किया?
6. वह बुद्धि किस काम की? इस पर रचित दोहा लिखें।
7. आचार्य भिक्षु की सिद्धान्तवाणी कोई तीन मौलिक निष्कर्ष बताएं।
8. रयणा देवी के उदाहरण के माध्यम से आचार्य भिक्षु ने क्या कहा?
9. मिथ्यात्व और मिथ्यादृष्टि में क्या अन्तर है?
10. भगवान ऋषभ से अरिष्टनेमि तक का काल प्राग-ऐतिहासिक क्यों कहा जाता है?
11. आगमवाणी के अनुसार सदोष धर्म किसके सदृश बताया गया है?

(B) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दें- 10×5=50

1. गुरांसा दाखूलालजी की बही से प्राप्त आचार्य भिक्षु की वंशावली लिखें।
2. जाटणी साधु को प्रासुक पानी नहीं देना चाहती थी-प्रसंग लिखें।
3. अवकाश के क्षण घटना लिखें।
4. स्वामीजी की अंतिम शिक्षा क्या थी?
5. अंतिम चातुर्मास के समय स्वामीजी के साथ कौन-कौन से संत थे?
6. स्वामीजी एक परिपूर्ण आचारनिष्ठ व्यक्ति थे। स्पष्ट करते हुए किसी एक घटना का उल्लेख करें।
7. मुनि थिरपालजी, फतेहचंदजी ने आचार्य भिक्षु से क्या निवेदन किया?
8. ठाकुर मोखमसिंहजी के बारे में लिखिए।
9. 'कयरे मग्गे मक्खाया' संबंधित घटना प्रसंग लिखें।
10. स्वामीजी का जीवन पुस्तक, नदी, इक्षु की भांति प्रेरणादायी था। इस कथन की पुष्टि करें।
11. 'विवाद का अंत' किसी एक घटना का उल्लेख करें।

(C) किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें- 3×10=30

1. भाव संयम की भूमिका को सविस्तार से लिखें-
2. ब्राह्य संघर्ष तीन प्रसंग सहित समझाएं।
3. आचार्य भिक्षु ने हेमराजजी स्वामी को शीघ्र दीक्षा लेने के लिए कैसे समझाया?
4. आचार्य भिक्षु के साधना काल के प्रारम्भिक वर्ष अत्यन्त समस्या संकुल तथा कष्टपूर्ण रहे-विस्तार से लिखें।